मलेरिया का टीका 2015 में संभावित

मलेरिया टीके के विकास में हम एक कदम आगे बढ़े हैं। अफ्रीका में किए गए एक लंबे परीक्षण के बाद यह आशा जगी है कि शायद मलेरिया के टीके को 2015 तक मंज़ूरी मिल जाएगी और 2016 में यह उपलब्ध हो जाएगा।

इस टीके का विकास पाथ मलेरिया वैक्सीन इनिशिएटिव के नेतृत्व में ग्लेक्सो स्मिथ क्लाइन ने किया है। टीके का नाम आरटीएसएस है और इसका परीक्षण अफ्रीका में 11 स्थानों के 15,000 बच्चों पर किया गया है। इनमें से आधे बच्चों की उम्र 6-12 सप्ताह के बीच थी जबकि शेष आधे 5 से 17 माह के थे। प्रत्येक समूह में से आधे बच्चों को आरटीएसएस टीका दिया गया था जबकि शेष को एक प्लेसिबो (यानी टीके के नाम पर एक औषधि विहीन मिश्रण) दिया गया था। इसके बाद सारे बच्चों को मलेरिया की रोकथाम के सामान्य उपाय एक समान दिए गए थे। इनमें मच्छरदानी का उपयोग शामिल था।

हाल ही में डरबन में आयोजित एक सम्मेलन में इस परीक्षण के आंकड़े प्रस्तुत किए गए। पाथ मलेरिया वैक्सीन इनिशिएटिव के उपाध्यक्ष डेविड कासलोव ने सम्मेलन में बताया कि परीक्षण के अट्ठारह महीनों के बाद पता चला है कि टीका ज़्यादा उम्र के बच्चों में ज़्यादा असरकारक है।

परीक्षण शुरू होने के एक साल बाद देखा गया कि बड़े बच्चों में मलेरिया के मामले 56 प्रतिशत कम और छोटे बच्चों में 31 प्रतिशत कम हुए थे। डेढ़ साल पूरा होने पर लगता है कि टीके का असर थोड़ा कम हुआ है। डेढ़ साल की अवधि में मलेरिया के मामलों में बड़े बच्चों में 46 प्रतिशत और छोटे बच्चों में 27 प्रतिशत की कमी देखी गई।

वैसे कासलोव का मत है कि समय के साथ टीके की प्रभाविता में कमी अपेक्षित थी। लगभग सारे टीकों के साथ ऐसा होता है कि समय के साथ उनका असर कम होता जाता है। इसका मतलब यह कि मलेरिया के टीके का बूस्टर डोज़ देना पड़ेगा। परीक्षण में शामिल एक-तिहाई बच्चों को बूस्टर डोज़ दिया भी जा चुका है और इसके परिणाम एक साल में सामने आ जाएंगे। अलबत्ता, प्रारंभिक परीक्षण के सकारात्मक नतीजों को देखते हुए ग्लेक्सो स्मिथ क्लाइन युरोप में इस टीके को स्वीकृति दिलवाने के लिए आवेदन करने पर विचार कर रही है। ***(स्रोत फीचर्स)***